Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380,
http://www.srjis.com/issues_data?issueId=218
Peer Reviewed, Refereed & Indexed Journal, JULY-AUG, 2023, Vol- 12/78
https://doi.org/10.5281/zenodo.8314414

समाज कार्य की वर्तमान भारतीय दृष्टि

डॉ. आशुतोष पाण्डेय
पोस्ट-डॉक्टरल शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
Email : ashusocialwork@gmil.com

Paper Received On: 21 AUG 2023
Peer Reviewed On: 27 AUG 2023
Published On: 01 SEPT 2023

Abstract

समाज कार्य सेवार्थी केंद्रित विधा है। इसके अंतर्गत किसी व्यक्ति, समूह एवं समुदाय की समस्या का समाधान इस प्रकार से किया जाता है कि वह अपनी समस्याओं का स्वयं निदान कर सकें। समाज कार्य व्यवसाय में समाज के साथ कार्य करने की छह प्रमुख प्रविधियाँ हैं, जिसका प्रयोग एक प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्ता द्वारा समस्याओं के समाधान हेतु किया जाता है। भारत में समाज कार्य पाठ्यक्रम के अंतर्गत भी इन्हीं प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है, लेकिन यहाँ की सामाजिक और आर्थिक परिस्थिति पश्चिम के देशों से अलग होने के कारण यहाँ समाज कार्य पाठ्यक्रम का विकास पश्चिम देशों की तुलना में बहुत ही कम रहा है। भारत में समाज कार्य पाठ्यक्रम को विकसित हुए आज दशकों बीत गए, लेकिन इसकी कोई भारतीय अवधारणा नहीं बन सकी। इसी उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए भारतीय समाज कार्य परिषद और उससे संबंधित विद्वानों ने समाज कार्य पाठ्यक्रम में देशज ज्ञान और तकनीक को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने का प्रयास कर रहे हैं। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य भारतीय परिप्रेक्ष्य में समाज कार्य की अवधारणा को समझना, ताकि समाज कार्य की नवीन दृष्टि प्राप्त हो सकें।

मुख्य शब्द : समाज कार्य, देशजता, भारतीय ज्ञान परंपरा और भारतीय समाज कार्य परिषद।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

1.1. परिचय

समाज कार्य एक व्यावसायिक सेवा कार्य है, जिसके अंतर्गत सेवार्थी की समस्या का समाधान इस प्रकार से किया जाता है कि वह अपनी समस्या का स्वयं निदान कर सकें। समाज कार्य की इस अवधारणा को यदि वैश्विक स्तर पर देखा जाए तो इसकी पुष्टि मैरी रिचमंड द्वारा 1917 ई. में लिखित पुस्तक 'सोशल डायग्नोसिस' से होती है। यह समाज कार्य के क्षेत्र में लिखी गयी पहली पुस्तक है जिससे समाज कार्य को एक नवीन दिशा प्राप्त हुई। इस पुस्तक ने दुनिया के अनेकों विद्वानों का ध्यान आकर्षित किया और समाज कार्य विषय को एक नवीन पाठ्यक्रम के रूप में स्थान प्राप्त हुआ। भारत में समाज कार्य शिक्षा की शुरूआत टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेस द्वारा 1936 में किया गया। यह समाज कार्य शिक्षा के क्षेत्र में स्थापित पहला शैक्षणिक संस्थान था। भारत में स्वतंत्रता के बाद समाज कार्य पाठ्यक्रम में अनेकों बदलाव हुए और देश के अधिकांशतः विश्वविद्यालयों में समाज कार्य पाठ्यक्रम को प्रमुखता से स्थान दिया। भारत में समाज कार्य पाठ्यक्रम को विकसित हुए आज कई दशक बीत गए हैं लेकिन समाज कार्य की कोई भारतीय अवधारणा विकसित नहीं हो पायी है। चूँकि समाज कार्य व्यक्ति, समूह एवं समुदाय की समस्याओं के समाधान पर बल देता है, इसलिए यहाँ की समस्याओं का उचित निदान तभी होगा, जब यहाँ की प्रविधियों में यहाँ की कार्य प्रणाली का समावेश होगा। इसलिए भारतीय समाज कार्य परिषद के मुख्य पुरोधा जिसमें डॉ. बिष्णु मोहन दाश, डॉ. वाई. एस. सिद्धगौड़ा, डॉ. मिथिलेश कुमार, सिद्धेश्वर शुक्ल आदि विद्वानों के नाम अग्रणी रूप से लिए जाते हैं, इन्होंने इन प्रविधियों के साथ भारतीय प्रविधियों को भी समावेशित करने का कार्य किया है। इन कार्यों के कारण भारत में समाज कार्य को एक नवीन दृष्टि प्राप्त हो रही है। भारतीय समाज कार्य परिषद और उससे संबंधित लोगों ने देशजता के अंतर्गत नानाजी देशमुख, गांधी, अंबेडकर आदि सामाजिक मॉडल को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने का प्रयास किया है। इन विद्वानों का यह मानना है कि समाज कार्य पाठ्यक्रम की शुरुआत निश्चित

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

रूप से इंग्लैंड, अमेरिका, जापान आदि देशों में हुए, लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि जिस परिपाटी पर उन देशों में कार्य हो रहे हैं, उसी परिपाटी में यहाँ भी हों। क्योंकि उन देशों की सामाजिक संरचनाएँ और समस्याएँ भारत से अलग हैं इसलिए यहाँ की समस्याओं का समाधान यहीं के देशज उपागम से करना होगा। इसलिए वेद, गीता, पुराण, वांगमय आदि अन्य ग्रंथों और सामाजिक कार्यकर्ताओं जैसे – गांधी, अंबेडकर, नानाजी देशमुख आदि की बातों को स्वीकारते हुए समाज कार्य को एक नवीन दृष्टि प्रदान करने की कोशिश की जा रही है।

1.2. साहित्य समीक्षा

प्रस्तुत शोध पत्र को पूर्ण करने हेतु सोशल वर्क इन इंडिया, इंडियन सोशल वर्क, नानाजी देशमुख : एन इपीटोम ऑफ सोशल वर्क, इंडिनाइजिंग एंड डीकोलनाइजिंग सोशल वर्क एजुकेशन, इंट्रोडक्सन टू सोशल वर्क आदि कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकों के आधार पर शोध पत्र को पूर्ण करने का प्रयास किया गया है। *'सोशल वर्क इन इंडिया पुस्तक'* देशज समाज कार्य की प्रथम पुस्तक है, जिसमें समाज कार्य के देशज उपागम पर विस्तृत उल्लेख किया गया है। इस पुस्तक में महान भारतीय विचारकों विशेषकर स्वामी विवेकानन्द, डॉ. भीम राव अम्बेडकर, महात्मा गांधी, विनोबा भावे और नानाजी देशमुख द्वारा प्रतिपादित महत्वपूर्ण योगदानों और विकासात्मक मॉडलों को समाहित करने का प्रयास किया गया है, जो भारतीय समाज के पुनर्निर्माण में अत्यधिक प्रासंगिक है। *'इंडियन सोशल वर्क पुस्तक'* में सामाज कार्य के भारतीय परिप्रेक्ष्य, स्वदेशीकरण, समाज कार्य में हिंदू, बौद्ध एवं जैन धर्म की प्रासंगिकता आदि के संदर्भ में विस्तृत उल्लेख किया गया है। 'नानाजी देशमुख : एन इपीटोम ऑफ सोशल वर्क' पुस्तक में नानाजी देशमुख के सामाजिक कार्यों एवं ग्रामीण विकास के क्षेत्र में किए गए योगदान को प्रस्तुत करने का एक विनम्र प्रयास किया गया है। पुस्तक में नानाजी देशमुख के अनूठे चित्रकूट मॉडल और सामुदायिक विकास, स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा, कृषि, पर्यावरण और सतत विकास के क्षेत्र में किए गए प्रयासों को सम्मिलित किया

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

गया है। इस पुस्तक में सेवा की भारतीय अवधारणा और अर्थ तथा सामाजिक कार्य में एकात्म मानववाद के सिद्धांत का महत्व, सार्वभौमिक मानवतावाद को विकसित करने, सामाजिक एकजुटता को पूरा करने, समाज में सद्भाव लाने और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से समग्र विकास सुनिश्चित करने के लिए एक नया विश्व दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह पुस्तक देशज समाज कार्य दृष्टिकोण और हस्तक्षेप रणनीतियों को विकसित करने में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है। यह पुस्तक समाज कार्य, ग्रामीण विकास, समाजशास्त्र और अन्य संबंधित सामाजिक विज्ञान विषयों के छात्रों, शिक्षकों, शोधकर्ताओं के साथ-साथ सामाजिक पुनर्निर्माण और ग्रामीण विकास के क्षेत्र में काम करने वाले चिकित्सकों और नीति-निर्माताओं के लिए बेहद उपयोगी है। *'इंडिनाइजिंग एंड डीकोलनाइजिंग सोशल वर्क एजुकेशन'* पुस्तक में भारत और दक्षिण अफ़्रीकी देशों में समाज कार्य शिक्षा के नवीन दृष्टिकोण को समझने और कल्याण और मानव मुक्ति के क्षेत्र में भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनः जीवंत करने का प्रयास किया है और साथ ही साथ सामाज कार्य शिक्षा और अभ्यास में प्रमुख धर्मों के महत्व के प्रति एक प्रवचन विकसित करने का प्रयास किया है। पुस्तक में भारतीय संदर्भ में सामाजिक वैयक्तिक कार्य और समूह कार्य अभ्यास के स्वदेशी मॉडल और तकनीकों को विकसित करने का कार्य किया गया है। *'इंट्रोडक्सन टू सोशल वर्क'* पुस्तक समाज कार्य शिक्षा और नवीन सामाजिक मुद्दों पर विशेष विचार के साथ वर्तमान सामाज कार्य अभ्यास पर एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करता है।

1.3. समाज कार्य की वर्तमान भारतीय दृष्टि एवं चुनौतियाँ

समाज कार्य एक प्रैक्टिस बेस्ड अनुशासन है जो सामाजिक परिवर्तन, समाज विकास, सामाजिक एकत्रीकरण और लोगों के अंदर सशक्तिकरण की प्रेरणा देता है। यह एक ऐसी विधा है जो लोगों के साथ और लोगों के लिए कार्य करता है। समाज कार्य व्यवसाय में समाज में कार्य करने के दो मूलभूत तरीकें हैं - वैयक्तिक सेवा कार्य, समूह कार्य और सामुदायिक सेवा कार्य। यह समाज कार्य की प्राथमिक प्रविधि है जो लोगों के

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

साथ मिलकर कार्य करती है। वहीं सामाजिक क्रिया, समाज कल्याण प्रशासन एवं सामाजिक शोध समाज कार्य की द्वितीयक प्रविधि है जो लोगों की भविष्यगत समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए कार्य करती हैं। इस प्रकार समाज कार्य पाठ्यक्रम में कुल छः प्रविधियों का प्रयोग प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा व्यक्ति, समूह एवं समुदाय की समस्याओं के निदान हेतु किया जाता है। समाज कार्य पाठ्यक्रम में इस प्रविधि का प्रयोग आरंभिक काल से लेकर वर्तमान तक किया जाता रहा है, लेकिन भारतीय परिप्रेक्ष्य में यदि समाज कार्य में प्रयोग होने वाली प्रविधियों को देखे तो आज इनकी कार्य पद्धति में परिवर्तन की अत्यंत आवश्यकता है। सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य, समाज कार्य की प्राथमिक प्रविधि है। जिसका प्रयोग समाज कार्य के अकादमिक जगत में बड़े पैमाने पर किया जाता है। इसके माध्यम से समस्याग्रस्त व्यक्ति का मनो-समाजिक अध्ययन किया जाता है, ताकि व्यक्ति स्वस्थ होकर समाज के साथ उचित समन्वय स्थापित कर सके। लेकिन इस प्रविधि की प्रासंगिकता को यदि भारतीय परिदृश्य में देखा जाए तो यह अमेरिका और इंग्लैंड की तुलना में भारत में कम लोकप्रिय है। क्योंकि भारत की सामाजिक और आर्थिक परिस्थिति जिस तरह की है वह इन देशों की नहीं है। पश्चिम के देशों में क्लाइंट, कार्यकर्ता के पास आता है और भारत में कार्यकर्ता को स्वयं उनकी समस्याओं के लिए जाना पड़ता है। इसलिए यह प्रविधि भारत में उतनी प्रासंगिक नहीं है, जितनी पश्चिम के देशों में है। पश्चिम के देशों में अपने यहाँ कार्य करने के कई सिद्धांत सीधे तौर पर प्रयोग करते हैं जैसे – वैयक्तिक अध्ययन में 'मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत' और 'ईगो साइकॉलजी'। 'मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत' में फ्रायड ने व्यक्तित्व की संपूर्ण संरचना को समझने के लिए 'आकारात्मक मॉडल' (चेतन, अर्धचेतन और अचेतन) और 'संरचनात्मक मॉडल' (इड, इगो और सुपर इगो) में विभाजित कर कार्य को एक नई दिशा प्रदान की है। इसलिए यहाँ के सामाजिक कार्यकर्ता इन सिद्धांतों से सीधे तौर से परिचित होते हैं और इसका प्रयोग सरलतपूर्वक कर लेते हैं। सामाजिक समूहिक सेवा कार्य में एक सामाजिक कार्यकर्ता का महत्वपूर्ण

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

योगदान होता है। इसमें कार्यकर्ता को समूह की मनोवृत्तियों, दशाओं, व्यक्तिगत व्यवहार, सामूहिक व्यवहार, कार्य-कारण संबंधों आदि की विस्तृत जानकारी होनी चाहिए, ताकि जैसी आवश्यकता हो वह लोगों के साथ वैसा व्यवहार कर सके। समूह कार्य में संस्था तथा समूह दोनों का होना अत्यावश्यक है, क्योंकि समूह व्यक्ति से ही जुड़ा होता है और प्रत्येक समूह की अपनी अलग-अलग विशेषताएँ, समस्याएँ, रीति-रिवाज आदि होती हैं, इसलिए इस तरह की समस्याओं से अवगत होने के लिए संस्था का निर्माण किया जाता है। इसमें कार्यकर्ता की भूमिका अहम होती है, क्योंकि वह समूह के सभी कार्यों के केंद्र में रहता है और समूह के सदस्यों में जैसी क्षमता होती है वह उसी अनरूप उन्हें उचित मार्गदर्शन देकर उनसे कार्य को क्रियान्वित कराता है। इसमें कार्यकर्ता समूह के लोगों को उचित मंत्रणा देता है और कार्यों को सम्पन्न करने के लिए उन्हें अभिप्रेरित भी करता है। इसमें कार्यकर्ता समूह के लोगों के साथ इस तरह के कार्यों को क्रियान्वित कराता है, ताकि लोग एक दूसरे को समझ सके, उनसे संबंध स्थापित कर सके, अपने कौशल से एक दूसरे को लाभान्वित कर सके, अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को समझ सके, अपनत्व की भावना का विकास आदि कर सके। समूह कार्य प्रजातांत्रिक प्रणाली पर आधारित होता है और इसमें समूह को किसी भी तरह के विशिष्ट लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु बाध्य नहीं किया जा सकता है, क्योंकि समूह में रहने वाले लोगों को यह पूरा अधिकार होता है कि वह अपनी रुचि के अनुसार कार्यों को क्रियान्वित कर सके। इस प्रकार सामूहिक कार्य में समूह के सदस्य और कार्यकर्ता के बीच घनिष्ट संबंध होता है और यह संबंध ही समूह को उचित मार्गदर्शन प्रदान करता है। वहीं सामुदायिक संगठन वह प्रक्रिया है जिसमें समुदाय अपनी आवश्यकताओं और उद्देश्यों की पहचान करता है, उसे पूरा करने हेतु आंतरिक एवं बाह्य संसाधनों की खोज करता है और उसके अनुरूप अगली कार्यवाही करता है। ऐसा करने से समुदाय के लोगों में सहयोगात्मक भावना का विकास होता है। समुदाय के लोगों के साथ किस प्रकार से कार्य किया जाता है उसकी तीन दृष्टि है। पहला विनिर्दिष्ट विषयवस्तु दृष्टिकोण, जिसके

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अंतर्गत कोई कार्यकर्ता सर्वप्रथम किसी समस्या की पहचान करता है तत्पश्चात उसके समाधान हेतु किसी कार्य योजना का निर्माण करता है। दूसरा सामान्य दृष्टिकोण, इसके अंतर्गत कोई भी संगठन किसी विशेष क्षेत्र में सेवा कार्य हेतु प्रयास करता है। तीसरा प्रक्रिया दृष्टिकोण, जिसमें एक प्रक्रिया के माध्यम से समुदाय में रहने वाले लोगों की समस्याओं एवं आवश्यकताओं की पहचान कर उसके अनुरूप कार्य किया जाता है। लेकिन भारतीय परिप्रेक्ष्य में यदि वैयक्तिक सेवा कार्य के अंतर्गत सेवार्थी की समस्या समाधान करने के तरीकों को देखें तो यहाँ योग, प्राणायाम, ध्यान, भक्ति आदि कई ऐसे तरीके हैं जिसका उल्लेख धार्मिक ग्रंथों में निहित है। वहीं समूहिक कार्य और सामुदायिक संगठन में कार्य करने हेतु अनेकों देशज तकनीक का उल्लेख गांधी, अंबेडकर, नानाजी देशमुख, अरबिंदो, विवेकानंद, गीता, पुराण आदि ग्रंथों में किया गया है। जिसका प्रयोग कर समूह और समुदाय के कार्यों को और अधिक सरल बनाया जा सकता है। लेकिन समाज कार्य के पाठ्यक्रमों में भारतीय अवधारणाओं, देशज ज्ञान परंपरा, देशज तकनीकी पद्धति आदि को कोई विशेष महत्व नहीं दिया गया। इसलिए आज समाज कार्य के पाठ्यक्रमों में उपर्युक्त विद्वानों के विचारों और कार्यों को स्थान देने की अति आवश्यकता है जो समाज कार्य पाठ्यक्रम और सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए एक चुनौती का विषय है।

1.4. समाज कार्य के नवीन देशज मॉडल

समाज कार्य के नवीन देशज मॉडल के अंतर्गत हम केस वर्क, ग्रुप वर्क और कम्यूनिटी ऑर्गनाइज़ेशन के मॉडल में कुछ नवीन दृष्टि को सम्मिलित किया गया है जिसके प्रयोग से समाज कार्य एक नवीन दिशा प्राप्त होगी –

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

समाज कार्य के भारतीय मॉडल	
• सभ्यता • संस्कृति • लोकाचार • रीति-रिवाज • परंपरा • नैतिकता • धर्म • योग • प्राणायाम • भक्ति • मंत्र • उपासना • साधना आदि का ज्ञान • मेंढ़ा लेखा, हिबरे बाजार एवं रालेगण सिद्धि जैसे ग्राम विकास मॉडल। • नानाजी देशमुख का ग्राम शिल्पी मॉडल।	कार्यकर्ता को समाज कार्य की पाश्चात्य पद्धतियों (केस वर्क, ग्रुप वर्क और कम्यूनिटी ऑर्गनाइज़ेशन) का ज्ञान।

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

• गांधी का ग्राम विकास मॉडल। • विनोबा भावे का मॉडल। • अंबेडकर मॉडल। • स्वामी विवेकानंद का मॉडल। • अरबिंदों का मॉडल। • अन्य भारतीय विद्वानों के सिद्धांतों एवं विचारों का समावेशन।	

एजेंसी या कार्यकर्ता हेतु स्थान	संसाधनों की उपलब्धता

आवश्यक बातचीत

व्यक्ति, समूह एवं समुदाय में बदलाव

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उपर्युक्त मॉडल के माध्यम से समाज कार्य प्राथमिक पद्धति को समझने का प्रयास किया गया है। यदि समाज कार्य के शिक्षाविदों द्वारा समाज कार्य के पाठ्यक्रम में इस प्रकार की पद्धतियों को स्थान दिया तो निश्चित रूप से कार्य पद्धति में बदलाव होगा क्योंकि यदि एक सामाजिक कार्यकर्ता को भारतीय समाज कार्य मॉडल का ज्ञान होगा तो वह व्यक्ति की वस्तु स्थिति को और बेहतर तरीके से समझकर उसमें परिवर्तन लाने का प्रयास करेगा। उपर्युक्त मॉडल में जिस सभ्यता, संस्कृति, भक्ति, योग आदि की बात की गयी है उससे अनेकों समस्याओं का समाधान एक सामाजिक कार्यकर्ता कर सकता है। इसलिए समाज कार्य पद्धति को भारत में और समृद्ध समृद्ध करने की आवश्यकता है, ताकि सामाजिक कार्यकर्ता और सुनियोजित तरीके से सामाजिक समस्याओं का समाधान कर सके।

1.5. परिचर्चा

समाज कार्य एक व्यावसायिक सेवा कार्य है। इसके अंतर्गत व्यक्ति, समूह एवं समुदाय की समस्याओं का संधन इस प्रकार से किया जाता है कि व्यक्ति अपनी समस्याओं का स्वयं निदान कर सकें। समाज कार्य की वैश्विक अवधारणा भी यही कहती है और इस बात की पुष्टि बड़े-बड़े विद्वानों ने भी की है। लेकिन समाज कार्य की अवधारणा को यदि भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो इसकी कार्य पद्धति में अनेकों बदलाव लाने की आवश्यकता है। क्योंकि भारत और यूरोप की कार्य पद्धति एक जैसी नहीं है। इसलिए यहाँ इसकी कार्य पद्धति में देशजता का समावेश होना अत्यंत आवश्यक है। इसलिए अनेकों भारतीय विद्वानों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने वर्तमान समय को देखते हुए समाज कार्य में देशज पद्धतियों एवं अनुप्रयोगों को स्वीकार करने की बात कही है और वृहद स्तर पर इस पर लेखन कार्य भी हो रहा है। इसलिए शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं से यह अपेक्षा की जा रही है कि वह अधिक से अधिक भारतीय ज्ञान परंपरा और देशज मॉडल पर कार्य करें।

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

1.6. सुझाव

भारत में यदि समाज कार्य की वर्तमान दृष्टि को देखें तो अकादमिक क्षेत्र में यहाँ अनेकों बदलाव देखने को मिल रहे हैं। विगत पाँच वर्ष पूर्व समाज कार्य पाठ्यक्रमों में समाज कार्य की देशजता और भारतीय भारतीय ज्ञान परंपरा में कोई योगदान नहीं था, लेकिन *'भारतीय समाज कार्य परिषद'* और उससे जुड़े शिक्षाविदों, शोधार्थियों और अकादमिक जगत के लोगों ने इसमें अनेकों बदलाव करते हुए इसमें अनेकों सुझाव समाज-समय पर दिये हैं -

- भारत में समाज कार्य पाठ्यक्रम को और अधिक समृद्ध बनाना है तो इसमें देशज अनुप्रयोगों, देशज पद्धतियों आदि को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना होगा।
- विद्वानों और शिक्षाविदों का यह मानना है कि भारत गांवों का देश है, इसलिए इसके विकास में समाज कार्य की वर्तमान पद्धतियों के साथ-साथ क्षेत्रीय ज्ञान, तकनीकी, भाषा, संस्कृति आदि का भी समावेश होना चाहिए।
- सनातन धर्म में ऐसे अनेकों धर्मग्रंथ हैं जिसकी जानकारी सामाजिक कार्यकर्ताओं को होनी चाहिए, इसलिए सनातनी धर्मग्रंथों में निहित ज्ञान को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना चाहिए।
- गांधी, अंबेडकर, नानाजी देशमुख, स्वामी विवेकानंद, अरबिंदो आदि विद्वानों ने जो समय-समय पर ग्राम विकास, ग्राम शिल्पी, न्याय, अर्थव्यवस्था आदि का जो उल्लेख किया है उसे पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना चाहिए।
- समाज कार्य के पाठ्यक्रमों में क्षेत्रीय भाषा और बोली का समावेश होना अत्यंतआवश्यक है क्योंकि जिस समाज में हम कार्य करने हेतु जाते हैं यदि उस समाज की भाषा और बोली का ज्ञान नहीं होगा उस समाज का विकास नहीं होगा।
- समाज कार्य पाठ्यक्रमों में क्षेत्रीय सामाजिक कार्यकर्ताओं और उसके विचारों का समावेश होना चाहिए।

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

- समाज कार्य पाठ्यक्रम को क्षेत्र उन्न्मुख बना चाहिए, ताकि छात्र अकादमिक ज्ञान को सामाजिक ज्ञान से जोड़ सके।
- समाज कार्य पाठ्यक्रमों में गैर-सरकारी संगठनों, स्वैच्छिक संगठनों की कार्य पद्धति को समावेशित किया जाना चाहिए, ताकि छात्र उसके कार्य संस्कृति से परिचित हो सके।
- समाज कार्य पाठ्यक्रम में हिंदू मंदिर, मठ, गुरूद्वारा और अन्य आध्यात्मिक संगठनों की कार्य प्रणाली, कार्य संकृति आदि पर शोध कार्य और अध्ययन-अध्यापन होना चाहिए।
- समाज कार्य से संबंधित प्रत्येक लोगों को समाज कार्य की नैतिकता का ज्ञान होना चाहिए और इसी अनुसार कार्य व्यवहार करना चाहिए।
- समाज कार्य पाठ्यक्रम वस्तुनिष्ठ न होकर व्यक्तिनिष्ठ होना चाहिए।
- समाज कार्य पाठ्यक्रमों में देशज एवं नवीन ज्ञान की निर्मिति और उसका समावेश होना चाहिए।
- समाज कार्य पाठ्यक्रमों में मेंढ़ा लेखा, हिबरे बाजार एवं रालेगण सिद्धि जैसे ग्राम विकास मॉडल से विद्यार्थियों से परिचित कराना चाहिए।

संदर्भ

Banerjee, G.R. (1967) "Social Welfare in Ancient India", The Indian Journal of Social Work, Vol. XXVIII, No. 2.

Dash, B.M.(2022), Introduction to social work, Sage, New Delhi.

Dash, B.M., Kumar, M., Singh, D P., Shukla, S. (2020). Indian Social Work, Routledge Taylor & Francis, London.

Dash, B.M., Kumar, M., Shukla, S. (2019). Social Work in India, Concept Publication, New Delhi

Dash, B.M & Parshuraman, K.G., Ramesh, B. & Kumar, M.(2019). New Frontiers in Social Work Practice, Tumkur University, Tumkur, Karnataka.

Dash, B.M. & Roy, S. (2019).Fieldwork Training in Social Work. Routledge, Taylor & Francis, New Delhi.

Gore, M.S. (1993). The Social Context of Ideology: Ambedkar's Social and Political Thought. New Delhi: Sage Publishing.

Guha, R. (2012). Social work with Individuals and Groups. New Delhi: Centrum Press.

Mishra, P.D & Mishra, Bina. (2015). Social Work Profession in India. Lucknow: New Royal Book Company.

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

Misra G. & A. K. Mohanty (2002) Eds. Perspectives on indigenous psychology. New Delhi: Concept Publishing Company.

Perlman, Helen Harris (1957) Social Casework: A Problem-Solving Process. Chicago: University of Chicago Press.

Richmond, M. (1917). Social diagnosis (Vol.17). New York: Russell Sage Foundation.

Thomas, G. (2016). Social work-A Value based profession. Jaipur: Rawat Publications.

Upadhyay, R.K (2003) Social Case Work, Jaipur: Rawat.

Cite Your Article as:

Ashutosh pandey. (2023). samaj karya ki vartman bhartiya drushti. Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies, 12(78), 573–585. https://doi.org/10.5281/zenodo.8314414

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies